लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला-40

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासमबुद्धस्स

आचार्यनागार्जुनकृतः

सुहल्लेखः

A Friend's Letter of Ācārya Nāgārjuna

सञ्चयिता अनुवादकः संशोधकश्च
डॉ. प्रियसेन सिंहः

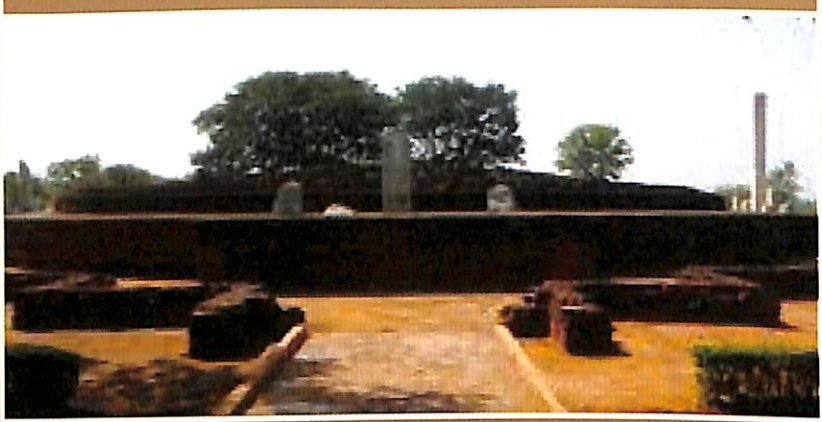

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
नवदेहली

लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला - ४०

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासमबुद्धस्स

आचार्यनागार्जुनकृतः

सुहल्लेखः

सञ्चयिता अनुवादकः संशोधकश्च

डॉ. प्रियसेन सिंहः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

(भारतशासन-मानवसंसाधनविकास-मन्त्रालयाधीनम्)

नवदेहली

पुरोवाक्

बौद्ध धर्म के सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय ग्रन्थों में आचार्य नागार्जुन रचित सुहृल्लेख का प्रमुख स्थान है। धम्मपद, सुत्तनिपात, थेरगाथा एवं थेरीगाथा की तरह सुहृल्लेख भी जन सामान्य को बौद्ध धर्म की नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षाओं को सरल व सहज भाषा में समझाने की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। बौद्ध धर्म की महायान परम्परा के प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य नागार्जुन ने अपने समकालीन राजा गौतमीपुत्र सातकर्णी को महायान के गूढ़ सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल भाषा में स्पष्ट करते हुए उन्हें अपने जीवन में अपनाने एवं उनकी सहायता से अपने राजनैतिक, राजसी व निजी जीवन को सुधारने का अवसर प्रदान करने की दृष्टि से इस ग्रन्थ की रचना की। उनके द्वारा रचित एक अन्य पत्र-ग्रन्थ 'रत्नावली' भी महायान के सिद्धान्तों को स्पष्ट करता है किन्तु उसकी विषयवस्तु कतिपय अधिक गूढ़ एवं ग्रन्थ का परिमाण अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत होने के कारण वह जन सामान्य में उतना प्रचलित नहीं हो पाया जितना कि सुहृल्लेख। इस ग्रन्थ के प्रचलित एवं प्रसिद्ध होने का प्रमाण इसी बात से मिल जाता है कि तिब्बती भाषा में तिब्बती विद्वानों द्वारा इस ग्रन्थ पर अनेकों टीकायें, अनुटीकायें लिखीं गयी। यह ग्रन्थ अपने मूल रूप में अर्थात् संस्कृत (कुछ विद्वानों के अनुसार बौद्ध संकर संस्कृत) में लुप्त हो चुका है। तिब्बती भाषा में इसका अनुवाद उपलब्ध है जिसे विद्वानों ने अंग्रेजी, हिन्दी एवं संस्कृत में पुनः समय-समय पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान में पालि-परियोजना में विकास अधिकारी के पद पर कार्यरत रहते हुए डॉ॰ प्रियसेन सिंह ने उन सभी प्रयासों को आधार बना कर एक ऐसा रूप प्रदान किया है जो हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं के पाठकों की बौद्धिक आवश्यकता को पूर्ण कर सके। उनका यह प्रयास सराहनीय

विषयक्रमः

नागार्जुनबुधवर्यैर्लिखितस्यास्य सुहृल्लेखस्य ।
सूचीयं विषयाणां ज्ञेया पृष्ठाङ्कांहिताऽत्र ॥

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
पुरोवाक् - प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी	*iii*
Preface (प्राक्कथन)	v
Nāgārjuna: A Brief Biography	vi-xxix
(*नागार्जुनः* एक संक्षिप्त जीवनी)	
Introduction to The *Suhṛllekha*	xxx-xlvii
सुहल्लेखस्य भूमिका (सुहल्लेख का परिचय)	
1. Encouragement to Listen to the Teachings	2
रचनायाः प्रयोजनम् (रचना का प्रयोजन)	3
2. Faith (*Śraddhā*) is necessary	4
अत्र श्रद्धा विधेया (इसमें श्रद्धा आवश्यक है)	5
3. Emphasis on Teachings	6
रचनायां प्रामाण्यम् (रचना में प्रमाण)	7
4. The Six Remembrances	8
बुद्धोपदिष्टाः षडनुस्मृतयः (बुद्धोक्त छह अनुस्मृतियाँ)	9
5. Ten Precepts	10
दशकुशलकर्मसेवनम् (दस कुशल कर्मों का अभ्यास)	11
6. Practising Liberality	12
दानपारमिता (दान पारमिता)	13
7. Practising Morality	14
शीलपारमिता (शील पारमिता)	15
8. Six *Pāramitās* (Six Perfections)	16
षट् पारमिताः (छह पारमिताएँ)	17
9. Respecting One's Father and Mother	18
मातृ-पितृपूजा (माता-पिता की सेवा)	19

(13) अप्रमादोऽमृतपदम् (अप्रमाद ही अमृत है)

अप्रमादोऽमृतपदं प्रमादश्च मृतेः पदम् ।
तदेतन्मुनिना प्रोक्तं समेषामुपकारकम् ॥23॥
तस्मात् कुशलधर्मस्य प्रचारार्थमहर्निशम् ।
सादरं सेवनीयोऽयम् अप्रमादो विवेकतः ॥24॥

मुनि का उपदेश कि अप्रमाद ही अमृत (निर्वाण) का पद है एवँ प्रमाद मृत्यु की ओर ले जाता है, सभी के लिए समानरूप से हितकर एवँ सुखद है। आपको कुशल धर्मों के प्रचार-प्रसार हेतु प्रयत्न करना चाहिए एवँ निष्ठापूर्वक, विवेकपूर्वक, ससम्मान अभ्यास करना चाहिए।

अप्रमाद कुशल धर्मों में चित्त को ध्यानपूर्वक लगाने और उसे अकुशलों से संरक्षित रखने की अवस्था है। यह वह मार्ग है जो अमरता के अमृत, *निर्वाण* की अमृत अवस्था की ओर ले जाता है। इसके विपरीत, *प्रमाद*, वह मार्ग है जो संसार में जन्म और मृत्यु के दुखों का अनुभव करने की ओर ले जाता है। *मुनि* ने निम्नलिखित तरीके से इस अवधारणा की घोषणा की है:

सावधानी अमरता का मार्ग है
--असावधानी मौत का मार्ग है।
सावधान मृत्यु को नहीं प्राप्त करेगा--
असावधान नित्य मरे हुए के समान है।

सदैव स्वयँ प्रयास करो, जिससे कि, *अप्रमाद* में -- स्वयँ को कुशल धर्मों के अभ्यास की आदत डालना -- उन कुशल धर्मों को उत्पन्न करने के लिए जो अभी तक अनुत्पन्न हैं और उन्हें और आगे विकसित करने के लिए जो विद्यमान हैं।

अगली *गाथा* इस विचार का उत्तर देती है कि "यदि आप मेरी सहायता करना चाहते हैं", तो आपने यह निर्देश एकदम प्रारम्भ में क्यों नहीं दिये? चूंकि मैंने असावधान होने के कारण अतीत में किया है, तो अब मैं क्या कर सकता हूँ।

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः)

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी

नवदेहली-110058